# धम्मत्थुई

## (धर्म-स्तुति)

# महामंत्र नवकार

नमो अरिहंताणं

नमो सिद्धाणं

नमो आयरियाणं

नमो उवज्झायाणं

नमो लोए सव्व साहूणं

**एसो पंच णमोक्कारो, सव्व पावप्पणासणो**

**मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं**

# धम्मत्थुई

रचयिता–गुरु सुदर्शन शिष्य जय मुनि

**1. लोगस्स खेमं करिउं समत्थं, सिद्धन्तमुच्चं अदुवा मणुस्सं।**
**अक्खाहि मज्झं विणओ उ सीसो, पण्हं निवेदेइ गुरुस्स पासं॥**

विश्व का कल्याण करने में कुशल क्या है अहो,
कौन ऐसा व्यक्ति या सिद्धान्त है मुझ को कहो,
नम्र होकर शिष्य गुरुवर से है पृच्छा कर रहा,
अपनी और संसार की कल्याण इच्छा कर रहा॥

**2. धम्मो धरं धारइ धम्मिओ अ, मेरुव्व रक्खा करणे समत्थो।**
**धम्मं विणा जीवण धारणं पि, सक्कं न सम्मं तुह पण्णवेमि॥**

धर्म और धार्मिक पुरुष संसार का रक्षण करें,
जो सुमेरु बन हिफाजत धरती की हर क्षण करें,
जिंदगी भी धर्म बिन रे जीव टिक सकती नहीं,
सत्य कहता हूँ किसी में धर्म-सी शक्ति नहीं॥

**3. धम्मो सियावाय समुत्थिओ हि समाहिदाया पसिणाण होइ।**
**एगंत चिंतापरगो उ धम्मो सयं समस्सा सयमेव दुक्खं॥**

जिस धर्म की नींव में है स्याद्वादी धारणा,
विश्व के प्रश्नों का वो समाधान कारक है बना,
धर्म जब एकान्त के घेरों में होता बन्द है,
वो स्वयं बनता समस्या देता दुख और द्वन्द्व है॥

**4. दव्वेण भावेण दुहा अ धम्मो, अक्खीअए बाहिरओ उ दव्वो।**
**अब्भंतरो भावपरो य तम्हा, ते दो मिलित्ता सयलो हि धम्मो॥**

धर्म को हम हैं समझते मुख्यतः दो रूप में,
द्रव्य से और भाव से व्यवहार निश्चय रूप में,
धर्म की बाहरी क्रियाओं को कहा व्यवहार है,
आंतरिक भावों से मिलकर (जुड़कर) करता बेड़ा पार है॥

**5. जे संपदाया पसिया जगम्मि ते दव्वरूवेण कहेंति धम्मं।**
**पत्तं जहा होइ जलस्स ठाणं, धम्मस्स ठाणं तह संपदाया॥**

जग में जितने पंथ दिखते और संप्रदाय हैं,
वो धर्म की रक्षा में माने गए सदुपाय हैं,
जल से बुझती प्यास है जल की सुरक्षा पात्र से,
धर्म बचता पंथ से कहते गुरु यों छात्र से॥

**6. हिन्दू य इस्लाम खिरिस्त धम्मो, बोद्धो य सिक्खो जइणो जहूदी ।**
**पारस्स धम्मो इयरे य धम्मा बज्झं हि रूवं पयडी कुणंति ॥**

विश्वव्यापी धर्मों में अब तीन का ही नाम हैं,
बौद्ध है ईसाईयत है तीसरा इस्लाम है,
जैन हिन्दू सिख यहूदी पारसी आदि कई,
धर्म की हैं बाहरी शक्लें व शाखाएं कही ॥

**7. परंपरा सक्कइ धम्मसद्दा, परोप्परं अत्थ समाणदाया ।**
**एगेण पक्खेण तओ समाणा अण्णेण पक्खेण असमाणभावा ॥**

धर्म के मंचों पे चर्चा संस्कृति की होती है,
धर्म में लौकिक प्रथा की आकृति भी होती है,
परम्परा व संस्कृति और धर्म कुछ-2 एक हैं,
अन्य अर्थों में सभी में भिन्नताएं अनेक हैं ॥

**8. एगम्मि देसे समए य एगे, भोज्जा विभूसा विविहा य भासा ।**
**तेसिं सुरक्खा इइहास कज्जं जाणाहि एयं न उ धम्मतत्तं ॥**

किसी इलाके किसी समय जो खानपान प्रचलित हुआ,
भाषा बोली रहने सहने का भी ढंग विकसित हुआ,
संस्कृति के अंग ये इतिहास के अध्याय हैं,
पर नहीं हर्गिज कभी ये धर्म के पर्याय हैं।

**9. परं जया धम्ममया हवंति तया विरूवा अहिसाव रूवा।**
**तहा कहिज्जंति मयोसही ते विज्जा मणुस्साण दुगुंछणिज्जा ॥**

संस्कृति जब धर्म के चोगे को लेती है पहन,
धर्म को विकृत बना अभिशाप ही जाती है बन,
बुद्धिजीवी उस धर्म को कहकर अफीम पुकारते,
इस नशे में आदमी है धर्म का धन हारते ॥

**10. चारित्तधम्मं सुयधम्ममुत्तं, संतावपीलं हि दुवे हरंति।**
**नाणेण बुद्धि विमला विदोसा, चारित्तधम्मेण य आयसुद्धी ॥**

श्रुत तथा चारित्र दो पहलू धर्म के हैं कहे,
पीड़ा और संताप छूटे जो शरण इनकी गहे,
श्रुत से बुद्धि की हो शुद्धि, साफ हो अन्तः करण,
आत्मशुद्धि का उपाय, है बताया आचरण ॥

**11. मणो निरोहो वयणाण गुत्ती, कायस्स चेट्ठा पणिहाण जत्तो। (यत्न)**
**सव्वं समाहिप्पयमप्पणोऽत्थि तम्हा हि एए भणिया सुधम्मा ॥**

मन नियंत्रण भाषा संयम देह की हो साधना,
समझ लो इस जिंदगी के दुखों का है हल बना,
इसलिए शक्तित्रय को साधना ही धर्म है,
उलझनें सुलझाते जाना धर्म का ये मर्म है।

**12. मणस्स दोसा चउरो विभच्छा, कोहो तहा माण छलाति तण्हा,**
**मंदी करित्ता निहणंति एए ते धम्म वच्छस्स फलं लहन्ते ॥**

मन की गठरी में भयानक चार बैठे दोष हैं,
तृष्णा नागिन मान अजगर माया व आक्रोश हैं,
इनकी भीषणता घटाकर करती है जो खात्मा,
धर्म के मीठे फलों को चखती है वो आत्मा ॥

**13. आहार सुद्धी पढमं विहेया, न मज्जमसं गहणिज्जमत्थि ।**
**चोज्जं दुरायार दुरोदराणि अहम्म चिन्धा परिवज्जणीआ ॥**

व्यसन मुक्ति शर्त पहली, धर्म की ये नींव है,
मांस मदिरापान करके नरक जाता जीव है,
चोरी और व्यभिचार जूआ पाप की हैं निशानियां,
होती हैं बर्बाद इनसे कितनी ही जिंदगानियां ॥

**14. चारित्तधम्मो दुविहं निवूढो मुत्तिं ददाइ न संसओत्थि ।**
**गिहत्थवासो तह रण्णवासो मग्गा इमे दुन्नि समुद्धरंति ॥**

आचरण मुक्ति दिलाता इसमें हैं संशय नहीं,
आचरण की धार दो धाराओं में बहती रही,
घर में रहकर भी करी जा सकती है आराधना,
दूसरी है जंगलों में जा के करनी साधना ॥

**15. भत्ती तहा नाण चरित्तधम्मा जीवा महट्ठाणठिया हवंति।**
**एगे गुणे दो वि गुणा पविट्ठा एवं तओ वि भणिया तिगप्पा ॥**

भक्तिपथ व ज्ञानपथ और कर्मपथ जिसने चुना,
आत्मा की उन्नति का सपना सच उसने बुना,
एक गुण अपनाने से दो गुण भी पीछे आते हैं,
बिगड़ी चेतन की स्थिति को तिकड़ी बन सुलझाते हैं ॥

**16. देसस्स भत्ती पहुभत्ती सेट्ठा अम्मा पिऊणं तह सुद्धभत्ती।**
**कज्जा सया सत्थ चिआय* कारी, भत्तिं करेइत्ति निहालणीयं ॥ *(स्वार्थ त्याग)**

देशभक्ति श्रेष्ठ है भक्ति प्रभु की श्रेष्ठ है,
श्रेष्ठ भक्ति जनक जननी की तथा जो ज्येष्ठ हैं,
स्वार्थ का जो त्यागी है भक्ति वही कर सकता है,
भक्त या सेवक सभी की पीड़ा को हर सकता है।

**17. माला जवो संजम झाणमोणं दीहा तवा संतिकरा तया उ।**
**जया कसाया पतणू हवंति सल्ला हवन्तीयरहा उ माया ॥**

माला जप संयम तपस्या मौन आदि तब सफल,
जब कषाय आत्मा से हल्की हो जाए निकल,
अन्यथा ये माया रूपी शल्य बन चुभ जाते हैं,
कषायमुक्ति ही है मुक्ति संत ये बतलाते हैं।

**18. धम्मो सहावस्स वि वायगोऽत्थि, गुणस्स अट्ठं कहए य धम्मो ।**
**जहा जलं सीय सहावमंतं अग्गी य उण्हो पगईइ होइ ॥**

निज भाव में रहना धर्म का अर्थ माना जाता है,
उष्णता से अग्नि का ज्यों ठंडक से जल का नाता है,
गुण को भी है धर्म कहते आत्मगुण विकसित करो,
इस तरह गुण वृद्धि से निज भाव को संस्कृत करो ॥

**19. आया सईयप्पगइं पवण्णो गुणे निए पावइ जा पहाओ* । *(जिस पथ से)**
**सो चेव मग्गो कहिओ सुधम्मो जहा सहावस्स गई णु जाया (प्राप्ति) ॥**

आत्मा जिस पथ पे चल निजरूपता हासिल करे,
और अपने में समाए सब गुणों को भी वरे,
उस ही पथ को धर्म और सद्धर्म कहना चाहिए,
उसकी ही अनुपालना में लीन रहना चाहिए ॥

**20. चत्तारि धम्मस्स पवेसदारा दाणं अ सील तव सुद्धभावा ।**
**एतेहि जीवो सयलो य लोगो सव्वाण दुक्खाण करेइ अंतं ॥**

धर्म की नगरी के माने चार उत्तम द्वार हैं,
दान शील तप भावना ये धर्म के अवतार हैं,
चार के बल पर ये आत्मा नाश दुखों का करे,
चार का शरणा लिया जिसने वो क्यों दुख से डरे ॥

**21. आया सरीरं मण सेमुसी अ, चत्तारि पक्खा खलु जीवणस्स।**
**तेसिं अ तित्ती कमसो नु धम्मा, आहार सम्माणण नाणलद्धी ॥**

जिंदगी ये चार पहियों पर खड़ी इक कार है,
आत्मा है देह है मन बुद्धि का व्यापार है,
चारों की तृप्ति के साधन सम नहीं असमान हैं,
धर्म है आहार है सम्मान और विज्ञान है।

**22. धम्मेण हीणा खलु रायनीई, चण्डालिणी होइ विधंससंसी।**
**जया य सा धम्म गुणोववेया, तया जगज्जीव वियासकारी ॥**

राजनीति धर्म से विरहित अगर हो जाती है,
राक्षसी चण्डालिनी बनकर वो ध्वंस मचाती है,
धर्म का संस्पर्श मिल जाए तो वो वरदान है,
जगत् के जीवों का होता जाता फिर कल्याण है।

**23. धम्मस्स संगेण णरो महप्पा, गावा पवित्तो तह वंदणिज्जो।**
**पत्ताणि गंथस्स लहंति सन्नं धम्मो हि सव्वं परिवट्टए त्ति ॥**

धर्म के जुड़ने से जीवन की शक्ल जाती बदल,
मनुज बनते महात्मा पाषाण बनते पूजा स्थल,
कागजों को ग्रंथ का गौरव दिया है धर्म ने,
मूल्यहीनों को बहुत मूल्य दिया है धर्म ने ॥

**24. कामो य मोक्खो पुरिसत्थ दोण्णि, दोण्हं य सिद्धी धण धम्म हेऊ ।**
**कामा सुहं लब्भइ णस्सरं नु धम्मा सुहं सासयमप्पनिट्ठं ॥ (आत्माधीन) ॥**

काम एवं मोक्ष ये दो पुरुष के पुरुषार्थ हैं,
अर्थ से हो काम प्राप्ति धर्म से मोक्षार्थ है,
काम है जिस्मानी सुख नश्वर क्षणिक और दुख भरा,
मोक्ष शाश्वत शुद्ध सुख स्वाधीन है निर्मल खरा ॥

**25. ईसावयारो सुय देसगा वा सव्वण्णु बुद्धा पवयंति धम्मं ।**
**सव्वे वि आयारवियार सुद्धिं करित्तु भूमिं हि कुणंति सग्गं ॥**

सृष्टि में धर्मोपदेशक कर रहे उपकार हैं,
कोई ईश्वर का तनय पैगम्बर कोई अवतार है,
बुद्ध या सर्वज्ञ बनकर मार्गदर्शन कर रहे,
विचार और आचार शुद्ध कर स्वर्ग पैदा कर रहे ॥

**26. पवित्ति धम्मो य निवित्ति धम्मो आवासओ होइ जणस्स णिच्चं ।**
**पुण्णं पि धम्मो तह संवरो वि दुवे वि चक्खू पह दंसणट्ठं ॥**

है प्रवृत्ति और निवृत्ति धर्म की दो बाजुएं,
दोनों के सहयोग से ही जीव शिखरों को छुए,
पुण्य और संवर ये दोनों धर्म के दो पक्ष हैं,
मार्गदर्शन करते जैसे मिलके दोनों अक्ष हैं ॥

**27. दव्वेण खेत्ता समएण धम्मो न वत्थुओ मंगल कारगोऽत्थि।**
**सुद्धेण भावेण कओ उ धम्मो निस्संसयं मंगल संति दाया ॥**

द्रव्य शुद्धि क्षेत्र शुद्धि काल शुद्धि कर रहे,
भाव शुद्धि के बिना पातक नहीं है झर रहे,
भाव शुद्धि सहित जो करता धर्म की साधना,
उसके चारों ओर शान्ति रस बरसता है घना ॥

**28. सेवा मणुस्साण पसूण रक्खा, कीडाण पक्खीण सुपालणं वि।**
**वणप्फईए जल रक्खणं च, सव्वं इणं धम्मफलं समक्खं ॥**

मानवों की सेवा में इंसानियत आगे बढ़ी,
पक्षियों पशुओं व कीडों की सुरक्षा में खड़ी,
पेड़ पौधे और पानी के प्रति संवेदना,
सबके पीछे है छिपी बस धर्म की ही प्रेरणा ॥

**29. सव्वण्णु देवो गुरुणो महप्पा धम्मस्स आराहण कारणा नु।**
**जम्हाहि धम्मो सयलाण केन्दं सया निसेव्वो तह पालणीओ ॥**

नर से नारायण बनाती धर्म की आराधना,
आत्मा बनती महात्मा कर धर्म की पालना,
धर्म सबकी जिन्दगी का केन्द्र पालन हार है,
धर्म की सत्पालना से सब सुखी संसार है ॥